ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-9* December-2021
Anthology : The Research

वैश्विक पर्यावरणीय संकट और गांधी दर्शन की प्रासंगिकता

The Global Environmental Crisis and the Relevance of Gandhi's Philosophy

Paper Submission: 12/12/2021, Date of Acceptance: 23/12/2021, Date of Publication: 24/12//2021

भावना
सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
राजकीय नेहरू मैमोरियल
महाविद्यालय, हनुमानगढ़,
राजस्थान, भारत

सिद्धार्थ राव
सहायक आचार्य,
राजनीतिशास्त्र विभाग,
राजकीयनेहरू मैमोरियल
महाविद्यालय, हनुमानगढ़,
राजस्थान, भारत

सारांश

आज सम्पूर्ण विश्व में गहराता पर्यावरणीय संकट एक चुनौती बन कर उभरा है। पर्यावरण असन्तुलन की यह स्थिति सम्पूर्ण विश्व के लिए और भारत जैसे विकासशील देश के लिए तो अत्यन्त भयावह प्रतीत होती है। जिसके खतरे के बारे में तो हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने वर्षों पहले चेता दिया था। आज आवश्यकता है उनके आदर्शों को अपना कर पर्यावरण संकट का दूर करने की इस शोद्य पत्र के माध्यम से ‘‘वैश्विक पर्यावरणीय संकट और गांधी दर्शन की प्रासंगिकता के सन्दर्भ में पर्यावरण संकट और उससे उत्पन्न होने वाले असन्तुलन के विश्लेषण का प्रयास किया जायेगा।

Today, the deepening environmental crisis in the whole world has emerged as a challenge. This situation of environmental imbalance seems very frightening for the whole world and for a developing country like India. About the danger of which our father of the nation Mahatma Gandhi had warned years ago.Today there is a need to overcome the environmental crisis by adopting his ideals, through this paper, "an attempt will be made to analyze the environmental crisis and the imbalance arising out of it in the context of the global environmental crisis and the relevance of Gandhi's philosophy."

मुख्य शब्दः- विकास, वैश्विक, पर्यावरणीय संकट, गांधी दर्शन
Keywords:- development, global, environmental crisis, Gandhi philosophy

प्रस्तावना

विकास एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। हर विकास के अपने सकारात्मक और नकारात्मक परिणाम होते हैं। लेकिन विकास के दौर में यह आवश्यक हो जाता है कि हम पर्यावरण का ध्यान रखें। अगर बिना पर्यावरण की परवाह करे हम विकास की बात करे तो पर्यावरण पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है जो वर्तमान में हम सम्पूर्ण विश्व में महसूस कर पा रहे हैं। पिछले करीब तीन दशकों से ऐसा महसूस किया जा रहा है कि वैश्विक स्तर पर वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण से जुड़ी हुई है इसके संतुलन एवं संरक्षण के संदर्भ में पूरा विश्व चिन्तित है।

विकासशील तथा अल्पविकसित देशों के औद्योगिकीकरण के लिए और यहां की विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन जरूरी हो जाता है वहीं दूसरी ओर विकसित तथा औद्योगिकृत देशों में उपभोग का स्तर इतना ऊंचा है कि वहां की अपेक्षाकृत कम जनसंख्या के उपभोग के लिए भी प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर दोहन किया जाता है। दोनों ही स्थितियों में विश्व के प्राकृतिक संसाधनों पर भारी दबाव पड़ता है और समस्या उत्पन्न होती है। यह पर्यावरणीय असन्तुलन की स्थिति दिन प्रतिदिन घातक बनती जा रही है। विश्व का पर्यावरण इस प्रकार असंतुलित हुआ है कि मानवीय जीवन धीरे-धीरे संक्रमण की ओर बढ़ रहा है।

मानवीय क्रियाकलापों की वजह से पृथ्वी पर बहुत सारे प्राकृतिक संसाधनों का विनाश हुआ है। इसी को ध्यान में रखते हुए विश्व पर्यावरणीय मुद्दों पर वैश्विक बहस भी समय-समय पर हुई है और विश्व के अनेक देशों में इस हेतु अनेक समझौते भी सम्पन्न किये गये हैं। यूरोप, अमेरिका और अफ्रीका जैसे देशों में इस तरह के समझौते 1910 के दशक से ही शुरू हो गये थे। क्योटो प्रोटोकाल, रिओ सम्मेलन आदि समझौते इसी दिशा की तरफ उठाये गये प्रयास थे। परन्तु इन सबके बावजूद पर्यावरण विनाश की स्थितियां विकराल रूप से बढ़ रही है। भारत जैसे विकासशील और अधिक जनसंख्या वाले देश में तो स्थिति और अधिक भयावह प्रतीत होती है। भारत में नदियों का प्रदूषण प्रर्यावरण समस्या का ज्वलंत उदाहरण है। अतिवृष्टि, अनावृष्टि तो कहीं भूस्खलन जनजीवन को गम्भीर रूप से प्रभावित कर रही है। इस कारण से भारत के राजकोषीय बजट पर पर्यावरण का विशिष्ट प्रभाव पड़ रहा है। चूंकि हमारा देश कृषि प्रधान देश है ऐसे में कल्याणकारी बजट की कटौती करके पर्यावरण को संतुलित करने का प्रयास प्रशासन को करना पड़ता है जो कि देश के लिए नुकसानदायक है।

हमारे शास्त्रों में ‘संतोषं परमं सुखं’ का मुहावरा आया है इसलिए विकास की परिभाषा यह है कि विकास वह स्थिति है जिससे व्यक्ति और समाज स्थायी सुख, शान्ति और संतोष का उपभोग करते हैं। वहां प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण नहीं होता बल्कि उनकी वृद्धि होती रहती है। विकास के कारण समाज असन्तुलन नहीं होना चाहिए। असन्तुलन के कारण असन्तोष उत्पन्न होता है। इसी विचारधारा को वर्षों पहले अपने आचरण में उतारकर विश्व के सम्मुख प्रस्तुत किया था हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी नें। आज विश्व को आवश्यकता है उनके आदर्शों को अपनाने की। उन्होनें वर्षों पहले कहा था कि इस धरती के संसाधन सीमित है। उन्होनें कहा कि - ‘प्रकृति के पास हर एक की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त है लेकिन किसी एक के भी लोभ लालच को सन्तुष्ट करने के लिए कुछ नहीं है।’ किन्तु आज

स्थिति इसके विपरीत है। आज की वास्तविकता यह है कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी बन बैठा है और उसके साथ कसाई जैसा व्यवहार करने में लगा हुआ है।

जब हम पर्यावरणीय अवनति, प्रदूषण, वनों का विनाश, जैव विविधता को खतरा इत्यादि विषयों पर अपने विचार व्यक्त कर रहे होते हैं तब केवल लक्षणों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। इन समस्याओं का मूल कहीं ओर खोजा जाना चाहिए। वैश्विक स्तर पर विगत कुछ दशकों विशेषतः 1960-70 में पर्यावरण सम्बन्धित मुद्दों पर गहन विचार-विमर्श किया गया। विकास के जिस प्रारूप को अधिकांश विश्व ने स्वीकार किया, उस पर पुर्नविचार की आवश्यकता महसूस हुई। यह पुर्नविचार दो स्तरों पर शुरू हुआ। एक स्तर पर विकास के प्रारूप को कम दुष्प्रभावी बनाने पर विचार किया गया और दूसरे स्तर पर प्रचलित विकास के विकल्प की खोज की जाने लगी। दूसरे विकल्प के साथ-साथ ऐसे विचार को भी खोजा जाने लगा जो पर्यावरणीय संकट को समझने हेतु हमें एक महत्वपूर्ण नजरिया प्रदान कर सके। हमारी इस खोज में निःसंदेह महात्मा गांधी एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ''अर्नी नीस'' सुविचारित परिस्थिति की विचार के प्रवर्तक है, उन्होनें लिखा है कि ''गाँधी जी का आदर्श उन कुछ आदर्शों में से एक है, जो पर्यावरण सन्तुलन को दर्शाता है और उनके द्वारा पाश्चात्य संसार की भौतिक प्रचूरता और अपशिष्ट की आलोचना को परिस्थितिकीय आदोलन से जुड़े नेताओं ने स्वीकार किया है।'' वर्तमान में रियो-डी-जेनेरियो में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन में घोषित ''एजेण्डा 21'' सेक्शन 4 कुछ हद तक पर्यावरण पर गांधीवादी विचारों को ही प्रदर्शित करता है।

गांधी शाश्वत विचारों के प्रणेता है। गांधी के विचारों में सत्य एवं सत्य के आचरण की प्रायोगिक उपस्थिति एवं प्रासंगिकता है। गांधी ने उन विचारों को अंगीकार किया जिनसे केवल व्यक्ति का ही नहीं बल्कि समष्टि का भी कल्याण संभव होता है। गांधीवादी विचार कार्य-कारण सम्बन्धों पर अवलम्बित है फलतः गांधी के विचारों में एक नैसर्गिक गतिशीलता है। जिन विचारों में गतिशीलता एवं गत्यात्मक ऊर्जा होती है, वे विचार प्रत्येक समस्या का समाधान प्रस्तुत करने की शक्ति रखते हैं। गांधी की कुटीर उद्योग की अवधारणा, गांधी की अंहिसा की अवधारणा, गौ वध निषेध एवं गौ संरक्षण, स्वच्छता एवं आत्म स्वावलम्बन का मार्ग पर्यावरण को सन्तुलित करने का ही प्रयास है। यदि भारत तथा सम्पूर्ण वैश्विक पर्यावरणीय संकट का समाधान गांधी के विचारों को अंगीकार करके किया जाये तो पर्यावरण की भयावह व विनाशकारी उपस्थिति मानवता के लिए घनघोर संकट उत्पन्न नहीं करेगी। गांधी दर्शन में पर्यावरण के इन्हीं समस्त प्रश्नों का सहज एवं सरल समाधान है और इन्हीं संकटों के प्रति चिन्ता व्यक्त की गयी है।

1987 के ब्रुंडलैंड कमीशन रिपोर्ट के सामान्य भविष्य के विचार से बहुत पहले ही महात्मा गांधी ने स्थिरता और सतत विकास के लिए लगातार बढ़ती इच्छाओं और जरूरता के अधीन आधुनिक सभ्यता के खतरे की ओर ध्यान दिलाया था। अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज' में उन्होनें लगातार हो रही खोजों के कारण पैदा हो रहे उत्पादों और सेवाओं को मानवता के लिए खतरा बताया है। उन्होनें वर्तमान सभ्यता को अन्तहीन इच्छाओं और शैतानिक सोच से प्रेरित बताया। गांधी जी पकृति के जरूरत से ज्यादा विदोहन के विरोधी थे। उनका मानना था कि प्रकृति से हमें उतना ही लेना चाहिए जितनी हमें जरूरत है। आवश्यकता से अधिक लेकर प्रकृति की बर्बादी नहीं करनी चाहिए।

पर्यावरण प्रदूषण के अन्तर्गत वायु प्रदूषण पर टिप्पणी करते हुए उन्होनें कहा था कि उचित उपचार और उपायों के जरिये वायु प्रदूषण को रोकना विकास का एक आवश्यक पहलू है। महात्मा गांधी जब 1913 में साऊथ अफ्रीका में अपने पहले सत्याग्रह आन्दोलन की अगुवाई कर रहे थे तभी उन्होनें यह महसूस कर लिया था कि आधुनिक समाज तक स्वच्छ हवा पहुंचाने में लागत आयेगी। अपने एक लेख 'की टू हेल्थ' (स्वास्थ्य कुंजी) में उन्होनें साफ हवा की जरूरत पर रोशनी डाली थी। वह कहते हैं कि प्रकृति ने हमारी जरूरत के हिसाब से पर्याप्त हवा फ्री में दी है लेकिन पीड़ा थी कि आधुनिक सभ्यता ने इसकी भी कीमत तय कर दी है। आज से 100 साल पहले साफ हवा पर गांधी जी की समझ चिन्तन आज 21वीं सदी में उन्हें समकालीन बनाती है।

अकाल व पानी के सन्दर्भ में महात्मा गांधी के विचारों को आज याद करना बहुत ही महत्वपूर्ण है। उन्होनें बड़े पैमाने पर वनों के काटने का विरोध किया था और खाली भूमि पर अधिकाधिक पेड़ लगाने का अनुरोध किया था। गांधीजी ने वर्षा जल के संचयन पर भी जोर दिया। 1947 में दिल्ली में प्रार्थना सभा में बोलते हुए उन्होनें बारिश के पानी के प्रयोग की वकालत भी की और इससे फसलों की सिंचाई पर भी जोर दिया। किसानों पर 2006 में प्रस्तुत अपनी रिपोर्ट में स्वामीनाथन आयोग ने भी यही सिफारिश की थी जो गांधी दर्शन की वर्तमान में प्रासंगिकता को दर्शाने का उपयुक्त उदाहरण है।

गांधीवादी अवधारणा मनुष्य को मशीन मानने की संकल्पना के प्रतिकूल थी। गांधीवादी विचारों में मनुष्य को एक मानवीय संसाधन मानते हुए श्रम की महत्ता पर आधारित एक ऐसे समाज की स्थापना करना था। जिससे पर्यावरण पूरी तरह सुरक्षित रह सके। इसी कड़ी में आधुनिक सभ्यता की एक महत्वपूर्ण विशेषता गतिशीलता के लिए चौपहिया वाहन अर्थात कारों के इस्तेमाल के महात्मा गांधी घोर विरोधी थे। उनका मानना था कि इससे सड़कों पर चलने की कमी हो जायेगी और इसी का दुष्प्रभाव है कि आज हम ऑड एवं ईवन या कार फ्री दिन मना रहे हैं ताकि प्रदूषण के स्तर को कम किया जा सके जिसे गांधी जी ने अपने दूर दृष्टि से बहुत पहले ही महसूस कर लिया था।

गांधी जी की अहिंसक पर्यावरणीय दृष्टि में अनेक अन्तदृष्टियां भी हमें प्राप्त होती है जिनका सामना भी हमें आज करना पड़ रहा है। उन्होनें इंग्लैण्ड प्रवास के दौरान औद्योगिकीकरण के अभिशाप को महसूस किया और उसके कारण खतरे में पड़ रहे पर्यावरण पर भी अपना ध्यान केन्द्रित किया। उन्होनें चेतावनी दी कि संसाधनों का अंधाधुंध दोहन मानव अस्तित्व के लिए खतरा साबित होगा।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण जैव विविधता में सर्वाधिक तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं। इसके प्रभाव से अब तक अनेक जीव इस धरती से या तो विलुप्त हो चुके हैं या होने की कगार पर है। बेलगाम प्रदूषण के कारण जीवन विनाश के स्तर पर पहुंच चुका है। वर्तमान में 30 प्रतिशत से अधिक उभयचर, 23 प्रतिशत स्तनधारी तथा 12 प्रतिशत पक्षियों की जातियां संकटग्रस्त है। ऐसी कठिन परिस्थितियों में गांधी जी का जीवन दर्शन हमें प्रेरणा दे सकता है। जो सभी जीवों के प्रति समान दया भाव रखते थे। उनका मानना था कि जो क्रूरता हम अपने ऊपर नहीं कर सकते, वह हमें निम्न स्तर के जीवों के साथ भी नहीं करनी चाहिए। इस तरह के आदर्श को अपनाकर ही आज हम धरती पर विभिन्न जीव प्रजातियों को बचा सकते हैं।

वैसे तो आज विश्व में अनेक गम्भीर समस्याएं हैं पर प्रायः यह माना जा रहा है कि जो समस्याएं धरती की जीवन दायिनी क्षमताओं को खतरे में डाल रही है उन्हें प्राथमिकता देना जरूरी हो जाता है। वैज्ञानिकों ने समस्या के पुर्वानुमानों से भी अधिक गंभीर स्थिति होने की चेतावनी दी है। इस स्थिति में यह मुद्दा उठा है कि केवल तकनीकी बदलाव ही पर्याप्त नहीं है, व्यापक सामाजिक स्तर पर सादगी की ओर बढ़ना और उपभोक्तावाद के जोर को कम करना भी जरूरी है। ये विचार सहसा ही हमारा ध्यान गांधी दर्शन की ओर ले जाते हैं जिन्होनें बहुत पहले ही कह दिया था कि लालच औरअधिक उपभोग को धरती संभाल नहीं पायेगी। उन्होनें कहा कि जब चंद पश्चिमी देशों के उपभोक्तावाद से ही इतनी गम्भीर समस्याएं उत्पन्न हो गयी तो दुनिया भर में इसके प्रसार से संकट बढ़ जायेगा। उनकी इस चेतावनी की सार्थकता आज स्पष्ट नजर आ रही है, तो समाधान भी उनकी सोच में ही खोजे जा रहे हैं।

एक पुस्तक "सर्वाइविंग द सेंचुरी: फेसिंग क्लाउड कैओस एण्ड ग्लोबल चैलेंज" जो प्रोफेसर हर्बर्ट गिरार्डेट द्वारा सम्पादित की गयी है, उसमें चार मानक सिद्धान्तों अहिंसा, स्थायित्व, सम्मान और न्याय को इस पृथ्वी को बचाने के लिए आवश्यक बताया है। पर्यावरण को बचाने के लिए उसके साथ आत्मीय रिश्ते जरूरी है और पर्यावरणीय दशाओं को समझने के लिए हमें प्रकृति के साथ मधुर सम्बन्ध कायम करने होगे।

अध्ययन का उदेश्य

1. प्रमुख वैश्विक पर्यावरण के मुद्दों की पहचान करना।
2. गहराते पर्यावरणीय संकट का विश्लेषण करना।
3. महात्मा गांधी के पर्यावरणीय दृष्टिकोण का विवेचन करना।
4. वैश्विक पर्यावरणीय संकट को दूर करने में गांधी जी के विचारों की उपयोगिता का विश्लेषण।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते है कि पर्यावरण संरक्षण के सम्बन्ध में गांधीजी की अवधारणा नयी नहीं है। अपितु भारत की प्राचीन सभ्यता में सकी झलक मिलती है। धीरे-धीरे ही सही दुनिया गांधीजी और उनके उन सिद्धान्तों को अपना रही है जो उनके जीवन और कार्यों के केन्द्र में रहे। 'द टाइम मैगजीन' ने अपने 9 अप्रेल 2007 के अंक में दुनिया को ग्लोबल वार्मिंग से बचाने के 51 उपाय छापे जिसमें से 51वां उपाय था कम उपभोग, ज्यादा साझेदारी और सरल जीवन। अर्थात् टाइम मैगजीन जैसी पत्रिका भी अब गांधी जी के रास्तों को अपनाने के लिए कह रही हैं ये सब तथ्य बताते हैं कि गांधी जी की मौलिक सोच और उनके विचार कितने महत्वपूर्ण और गहरे हैं। जिन्हें अपनाकर हम पर्यावरण की विभिन्न समस्याओं से निपट सकते हैं। आज 21वीं सदी में पर्यावरण सम्बन्धी गाँधीवादी विचारधारा जो सामाजिक न्याय, संसाधनों का समतामूलक उपयोग, साझी सम्पत्ति संसाधन के रूप में आज भी प्रासंगिक है। उनकी एक प्रसिद्ध उक्ति हर समय के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गनिर्देशक है कि संसार में इतने संसाधन है कि वह प्रत्येक की आवश्यकता पूरी करने में समर्थ है किन्तु यह एक व्यक्ति के लालच के लिए भी पर्याप्त नहीं है।

सन्दर्भ सूची

1. *महात्मा गाँधी: 'हमारे गाँवों का पुनर्निर्माण, नवजीवन प्रकाश मन्दिर, अहमदाबाद, सन् 1948 पृ.9*
2. *महात्मा गाँधी: मेरे सपनों का भारत, नवजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद, सन् 1960 पृ.15*
3. *महात्मा गाँधी: 'स्वराज्य का अर्थ', सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली सन् 1996 पृ.6*
4. *अमर्त्य सेन: 'आर्थिक विकास एवं स्वातंत्र्य', राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2008 पृ.101-105*
5. *कमल नयन काबरा: 'भूमण्डलीकरण', प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2005 पृ.27*
6. *प्रो. बी.एम.शर्मा: 'गाँधी दर्शन के विविध आयाम', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2007 पृ.21*
7. *पंकज कुमार सिंह: 'समर्थ भारत', डायमण्ड पाकेट बुक्स (प्रा.) लि. नई दिल्ली, 2015 पृ.17*
8. *यंग इण्डिया, 04-12-1924, पृ.398*
9. *यंग इण्डिया, 04-04-1929 पृ.107*
10. *हरिजन, 09-01-1937, पृ. 286*
11. *यंग इण्डिया, 17-12-1925, पृ.440*
12. *यंग इण्डिया, 20-12-1928, पृ.422*
13. *हरिजन, 23-06-1946, पृ.198*